खोज (Search) या शोध (Research)

राजू जुयाल,
शोध सहायक, राजसं. रूड़की

आज का युग शोध का युग है, खोज तो बहुत ही कम पर, शोध तो प्रत्येक पग पर हो रहे हैं। मैने भी अपने आप से प्रश्न किया कि मैं क्या खोज रहा हूँ। शायद ज्ञान को ? कहते हैं जहाँ पर विज्ञान खत्म होता है वहाँ से ज्ञान की शुरूआत होती है। ज्ञान पढ़ने-लिखने से नहीं बल्कि स्वत: उत्पन्न होता है या फिर मैं खोज रहा हूँ नौंवा या दसवाँ सुर । आखिर सात या आठ सुरों से आप कितनी धुनें निकालेगें और कब तक ? खैर मेरी खोज तो मेरी सोच है और मेरा शोध वो शायद आपका, इनका उनका या फिर किसी का भी हो सकता है। मैं भी शोध कर रहा हूँ। घर में, आफिस में पड़ोस में, दोस्तों में, रिश्तेदारों में और वहाँ, जहाँ मुझे थोड़ा सा भी मौका मिल जाता है। बातें करते वक्त शब्दों का चयन भी तो शोध ही है।

घर से शोध की शुरूआत करें तो बचत के साथ-साथ स्थानीय उत्पाद (Local Items) को Branded में बदलने का । स्तर (Status) को ऊपर उठाने का फिर उसे कायम रखने (Maintained) का । बच्चों के भविष्य का। शुरू में उनके स्कूल के चयन का। फिर बच्चों के ट्यूशन का, उनके लिये पढ़ाई की सामग्री जुटाने का । फिर कम्पिटिशन के लिये शोध, उनकी कोचिंग के लिये शोध। बच्चों के मनमाफिक चयन न होने पर दफ्तर वाले, दोस्त पड़ोसी रिश्तेदार इत्यादि क्या कहेंगे कि बच्चे के लिये इतना सब कुछ करने पर भी .... लेकिन बच्चे की मनस्थिति या फिर वो क्या चाहता है उस पर कोई शोध नहीं ।

अब आता है ऑफिस में शोधों का सिलसिला । सबसे पहले आपने ऑफिस में तमाम सरकारी सुविधाएं जैसे कम्प्यूटर साथ में इंटरनेट, लैप टॉप, कलर प्रिंटर, फोटोकापी मशीन, टेलीफोन इत्यादि को जल्द से जल्द जुटाना वो कैसे ? इस पर भी कई शोध पहले से चले आ रहे मसलन आगे-पीछे घूमकर (चमचागिरी नहीं) कुछ धमकाकर या फिर .... पत्रों के शोध के लिए जरूरी है इंटरनेट की तीव्र गति (ज्यादा से ज्यादा जानकारी ज्यादा से ज्यादा कटपेस्ट) चलिये ये तो हमे ऑफिस का लक्ष्य पूरा करने के लिए करना पड़ता है। असल शोध तो ऑफिस में प्राप्त सरकारी सुविधाओं का भरपूर उपयोग जैसे आफिस के टूर से परिवार के सदस्यों की सैर, सरकारी फोन द्वारा पड़ोसी व रिश्तेदारों के हाल-चाल पूछना, फोटो कापी, प्रिंटर व इंटरनेट का अपने बच्चों के लिये इस्तेमाल की खुली छूट इत्यादि । इन सब का उपयोग एक सराकरी कर्मचारी के अलावा बेहतर कोई नहीं जान सकता और कई बातें तो हम लिख भी नहीं सकते ।

अब बारी है पड़ोस में शोध की । किस के घर में कौन-कौन आता है । किसका स्टेटस कौन सा है । किनसे मिलना-जुलना ठीक रहेगा, किनसे नहीं । कुछ तो हमारे स्टेटस से ऊपर हों कुछ साथ के हों और कुछ नीचे के भी होने चाहिएं । जिनसे कि हम अकड़ कर चल सकें । किस को हम कैसे प्रभावित कर सकते हैं, चाहे माध्यम सरकारी तंत्र द्वारा उपलब्ध सुविधा से हो या फिर अपने विज्ञान से । सुबह से शाम हो गई लेकिन शोधों का सिलसिला थमता नहीं लग रहा । अभी तो दोस्तों व रिश्तेदारों पर शोध बाकी है। ये सब शोध तो जाने अनजाने में हुए जा रहे हैं तो फिर मैं

क्या कर रहा हूँ ? शायद खोज ? किसकी ? शांति की ? या फिर अपने जन्म के उद्देश्य की ? या फिर ईश्वर की ? नाम की ? या फिर पैसों की या फिर .....

एक बार किसी ने मुझसे कहा कि जो बात आपने किसी के भले के लिये कही, जरूरी नहीं कि वह उसके लिये अच्छी हो या फिर जो तुम्हें बुरी लग रही है उसमें कहीं अच्छाई छिपी हो । यह भी एक शोध का विषय हो सकता है । बहरहाल मेरी सोच यह है कि आप जो भी शोध कार्य कर रहे हैं क्या उससे वर्तमान में या निकट भविष्य में आम जनता को क्या फायदा मिलेगा ।

विचार उठते चले गये । मैं इन्हें कलमबद्ध करता चला गया । लेखक नही हूँ फिर भी लिखने की कोशिश की है । कई पहलू अनछुये रह गये । शब्दों की पकड़ मजबूत न होने के कारण अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करना पड़ा ।

***